International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-05-2020; Accepted: 25-05-2020; Published: 11-06-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 60-62

छायावादी काल और स्त्रीः चेतना

मीना कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
छायावादी काव्य द्विवेदी–युग की इतिवृत्तात्मक और संस्कारी कविता की प्रतिक्रिया स्वरूप जन्मी थी। इसीलिए छायावादी कवियों की चेतना का विकास व्यापक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना के फलस्वरूप हुआ। राष्ट्रीय जीवन और साहित्य दोनों एक नवीन स्फूर्ति से अनुप्राणित हुए। छायावादी कवियों ने प्राचीन और नवीन दर्शनों से बहुत कुछ ग्रहण किया। इसीलिए उन कवियों ने आध्यात्मिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। वास्तव में यह आध्यात्मिक अभिव्यक्ति रहस्यात्मक प्रवृत्ति की जनक थी और उनमें अभिव्यक्ति की आकुलता भी थी। ये आध्यात्मिक मूल्य आस्था–भाव पर आधारित थे। छायावादी विचारधारा में व्यक्तिवादी चेतना पल्लवित हुई, जो तत्कालीन युग–चेतना का ही एक रूप थी।

मूल शब्दः छायावादी, द्विवेदी–युग, कवियों, व्यक्तिवाद

प्रस्तावना

कविता के शास्त्रीय बंधनों, जर्जर नैतिक मर्यादा और आचार्यत्व के प्रति आक्रोश जगा। स्वच्छन्द अभिव्यक्ति की छटपटाहट ने कवियों में मानव–प्रेम, प्रकृति–प्रेम, आध्यात्मिक प्रेम, राष्ट्र–प्रेम और सौन्दर्य–दर्शन की एक नयी दृष्टि पैदा की। जयशंकर प्रसाद ने छायावाद की इस रोमानी प्रवृत्ति को दृष्टि में रखते हुए। छायावाद की परिभाषा ही इस प्रकार से दी ''कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश–विदेश की सुंदरी के बाह्य–वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी (प्रेमपूर्ण) अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।''(1)

राष्ट्रीय चेतना के परिवेश में छायावादी काव्य–धारा विकसित हुई, पल्लवित हुई, पुष्पित तथा फलित हुई। इस समय हमारे जीवन तथा राष्ट्रीय चरित्र में बाहर और भीतर दोनों ओर से व्यापक परिवर्तन दिखाई दिए। राष्ट्रीय और सांस्कृतिक धरातल पर राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागृति का पैदा होना एक क्रान्तिकारी कदम था। राष्ट्रीय भावना ने राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के लिए वैचारिक संघर्ष पैदा किया। छायावादी विचारधारा भारत के व्यापक सांस्कृतिक जागरण और मानवीय चेतना की स्वाभाविक परिणति कहलायी। छायावाद एक नवीन सांस्कृतिक मनोभावना का स्रोत बना और उसे स्वतंत्र दर्शन का आधार मिला।

छायावाद के व्यापक धरातल को परिभाषित करते हुए डॉ0 नामवर सिंह ने लिखा है– ''छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है, जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से। इस जागरण में जिस तरह क्रमशः विकास होता गया, इसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी विकसित होती गई और इसके फलस्वरूप छायावाद संज्ञा का भी अर्थ–विस्तार हो गया।''(2)

छायावादी विचारधारा ने युग को वाणी दी थी। सुमित्रानंदन पंत का इस संदर्भ में कहना है– ''छायावाद उस भावना की पुकार थी जो बाहर की ओर राह न पाकर भीतर की ओर स्वप्न– सोपानों पर आरोहण करती हुई युग की अवसाद तथा विवशता को वाणी देने का प्रयत्न कर रही थी।''(3)

छायावादी कवियों में प्रेम पहले लौकिक, वस्तुनिष्ठ और आत्मनिष्ठ दिखाई देता है, किन्तु आगे चलकर इसे रहस्यमय और आध्यात्मिकता के आवरण से ढक दिया गया, अर्थात् अलौकिक स्वरूप प्रदान किया गया। छायावाद की प्रेमपरक कविता में सामंती और जर्जर व्यवस्था तथा रूढ़ियों के विरूद्ध थी। उनका धरातल मानवीय धरातल था और उन कविताओं में आतंरिक चेतना को अभिव्यक्त करने की शक्ति थी। छायावादी प्रेमपरक कविताएँ नवीन शैली, नवीन उद्भावनाओं तथा नवीन चेतना से संबलित होकर आयीं। इन प्रेमपरक कविताओं में भावमयता, संगीतात्मकता, आह्लाद तथा कल्पना का प्रथम बार दर्शन हुआ। छायावादी कवियों ने अपने काव्य में नारी–प्रेम, दीन–हीनों के प्रति–प्रेम, प्रकृति–प्रेम, राष्ट्र–प्रेम और ईश्वर–प्रेम की प्रमुखता एवं सुंदर तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। निराला की कविताओं में प्रेम की सुरसरि प्रवाहित हुई है। नारी–प्रेम के बहुत सुंदर–सुंदर चित्र निराला के काव्य में दिखाई देते हैं। निराला का प्रेम उदात्त और संस्कृतनिष्ठ है। उसमें परिष्कार और तथा श्रद्धा थी। वे नारी को प्रेयसी के रूप में जब चित्रित करते हैं, तब उनकी कविता में एक संयम और उदात्तता का चित्र उभरता है–

''खोली आँखें आतुरता से, देखा अमंद।
प्रेयसी के अलक से आती ज्यों स्निग्ध गंध,
आया हूँ मैं तो यहाँ अकेला, रहा बैठ,
सोचा सत्वर,
देखा फिर कर, घिर कर हँसती उपवन–बेला।''(4)

छायावादी युग धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आंदोलन का युग था, जिसका प्रभाव तत्कालीन हिन्दी–साहित्य पर दिखाई पड़ता है। नामवर सिंह ने लिखा है– ''कविता में नारी–संबंधी दृष्टिकोण में यह जो परिवर्तन हुआ, वह आकस्मिक नहीं है। उन्नीसवीं शताब्दी में जो सुधार–आंदोलन प्रारंभ हुआ था, वह बीसवीं सदी का प्रथम दशक समाप्त होते–होते बहुत जोड़ पकड़ गया। नारी–शिक्षा में तेजी से प्रगति हुई।''(5) छायावाद में नारी–मुक्ति का चिंतन भी इसी युग की देन है। कवियों ने नारी के प्रति दुर्व्यवहार, बाल–विवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह का विरोध किया तो विधवा– विवाह का समर्थन भी किया है।

छायावादी विचारधारा ने कर्म की विशालता, भावों की विशदता, विचारों और कथनों में उदारता, त्याग की महानता आदि भावों को प्रश्रय दिया। छायावाद ने आज के जीवन में निर्गुणियों के

रहस्यवाद की कोई जरूरत नहीं समझी। महादेवी वर्मा का कथन दृष्टव्य है– ''आज गीत में हम जिस नये रहस्यवाद को ग्रहण कर रहे हैं, वह इन सबकी विशेषताओं से युक्त होने पर भी उन सबसे भिन्न है। उसने पराविद्या की अपार्थिकता ली, वेदान्त के अद्वैत की छाया–मात्र ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और हम सबने कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य भावसूत्र में बँधकर एक निराले स्नेह, संबंध की सृष्टि कर डाली। जो मनुष्य के हृदय को आलम्बन दे सका, पार्थिव प्रेम को ऊपर उठा सका तथा मस्तिष्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्कमय बना सका।''(6)

छायावादी काव्य में नारी का मानवीय धरातल पर वर्णन कर नारी–मुक्ति की आकांक्षा व्यक्त की गई है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एक अभागी युवती को बिम्ब के माध्यम से कारूणिक अभिव्यक्ति देकर उसके श्रम के महत्त्व को प्रतिष्ठित करते हैं:–

''वह तोड़ती पत्थर,
कोई न छायादार
पेड़ वह, जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रियकर्म–रत मन,
गुरू हथौड़ा हाथ, करती बार–बार प्रहार
सामने तरू– मालिका अट्टालिका, प्राकार।
चढ़ रही थी धूप, गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप, उठी झुलसती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू, गर्द चिनगीं छा गयी,
प्रायः हुई दुपहर, वह तोड़ती पत्थर।
ढुलक माथे से गिरे सीकर
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा
मैं तोड़ती पत्थर।''(7)

छायावादी युग में लौकिक प्रेम की पवित्रता और महत्ता को स्थापित किया गया। इस युग के कवियों ने मानवीय प्रेम को उज्ज्वलता, धवलता और शुभ्रता प्रदान की और अलौकिक प्रेम के रूप में प्रतिष्ठित किया है। जयशंकर प्रसाद ने प्रेम को मानव–जीवन की सर्वोच्च साधना कहा है–

''पथिक, प्रेम की राह अनोखी,
भूल–भूल कर चलना है,
प्रेम पवित्र पदार्थ, न इसमें कहीं कपट की छाया हो,
इसका परिमित रूप नहीं, जो व्यक्ति मात्र में बना रहे।
क्योंकि यही प्रभु का स्वरूप है, जहाँ कि सबको समता है।''(8)

छायावादी काव्य में लौकिक–अलौकिक, ऐन्द्रिक–आत्मिक, स्वकीया– परकीया प्रेम के बीच कोई विभाजन–रेखा नहीं दिखाई देती है। छायावादी काव्य में लौकिक प्रेम भी धीरे–धीरे पुष्ट होकर अलौकिक बन जाता है। मनुष्य का सामान्य ऐन्द्रिक प्राकृतिक प्रेम आहिस्ता–आहिस्ता ईश्वरीय या अलौकिक दिव्य प्रेम हो जाता है। छायावादी कविता प्रेयसी के प्रेम की भी युक्त व्यंजना करती है। छायावादी कविता में प्रेम–व्यापार को देखकर यह अनुमान लगाना भी एक कठिन कार्य है कि यह प्रमोद्गार स्वकीयता के प्रति व्यक्त किया है या किया है किसी परकीया नायिका के प्रति? छायावादी कवियों के काव्य में प्रेम की गंभीरता और पावनता के दर्शन होते हैं। इनमें एक प्रमुख प्रवृत्ति यह दिखाई देती है कि मिलन में भी जलन की अनुभूति हुई और जलन में सुख–संतोष का अनुभव।

काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है। जयशंकर प्रसाद के अनुसार– ''आत्मा की मनन–शक्ति की वह असाधारण अवस्था, जो श्रेय सत्य को उसके मूल चारूत्व में सहसा ग्रहण कर लेती है, काव्य में संकल्पनात्मक मूल अनुभूति कही जा सकती है।''(9)

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने भी स्वानुभूति की महत्ता प्रतिपादित की है। जब सत्य अपनी निजी अनुभूति द्वारा उपलब्ध होता है, तभी साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित होता है। जन कवि अपनी अनुभूति से सत्य को पहचानता है तभी साहित्य की सृष्टि होती है। इलाचन्द्र जोशी ने भी माना है कि कविता में कवि की आत्मा की गहनतम अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। कवि अपनी कविता में अपनी निजी आशाओं तथा अभिलाषाओं की जो अभिव्यक्ति करता है, उसमें, उसकी आत्म स्व की सूक्ष्म अनुभूति व्यंजित होती है।

यही अभिकल्पना सौन्दर्य की सृष्टि करती है। 'विजनवती' की भूमिका में इलाचंद्र जोशी ने लिखा है– ''प्रत्येक उच्च कोटि की कविता में कवि की आत्मा की निगूढ़तम आकांक्षाओं का आभास स्वप्नों के रूप में मिलता है।''(10) उदयशंकर भट्ट ने 'स्व' की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को ही साहित्य–सृजन का मूलाधार माना है– ''सृजन अपनी (कवि की) अनुभूतियों का अभिव्यक्तिकरण है।''(11)

छायावादी कवियों की यह विशेषता है कि उन्होंने नारी–सौन्दर्य को अत्यन्त शांत, श्लील और समर्पण भावना से देखा है। पंत ने बालिका को देखा और देखते ही उनका हृदय अनुराग से भर गया। बालिका की स्वाभाविक चपलता ने कवि का मनमोह लिया–

''एक पल मेरे, प्रिया के हम पलक,
ये उठे ऊपर, सहज नीचे गिरे,
चपलता ने इस विकंपित पुलक से,
दृढ़ किया माना प्रणय संबंध था।''(12)

इन पंक्तियों में व्यक्त कवि के प्रेम का मूलाधार बालिका का अद्वितीय एवं अपूर्व सौन्दर्य है। पंत के मन में यह अपूर्व सौन्दर्य एक हलचल पैदा कर देता है और पंत कह उठते हैं–

''एक पल, निज स्नेह श्यामल दृष्टि से
स्निग्ध कर दी दृष्टि मेरी दीप सी।''(13)

प्रेम–युग्म ने इस प्रकार हृदय की मूल वृत्ति संतुष्ट की और संयोग का वह मधुर व्यापार कुछ समय तक चलता रहा। कवि के जीवन को बसंत और ऐश्वर्य ने रस स्निग्ध कर दिया। संयोग के बाद विरह का क्षण आया और इस क्षण ने कवि के हृदय को सब तरफ से कंगाल कर दिया। नारी के सौन्दर्य और साथ का अवलम्बन लेकर यौवन की जिन मधुर भावनाओं को विकास के लिए पथ मिलता है, वह अवरूद्ध हो गया।

छायावादी विचारधारा ने एक ऐसे काव्य–आंदोलन का विकास किया, जिसमें व्यक्ति मूलक, प्रेममूलक एवं सौन्दर्यमूलक जीवन–दृष्टि दिखाई दी। कुछ लोगों ने इस छायावादी काव्य को जीवन–मूलक काव्य भी कहा। छायावाद में कवियों ने पहली बार प्रेम को आधार बनाकर आत्म–अभिव्यक्ति की। पहले पहल सुमित्रानंदन पंत ने 'भावी पत्नी के प्रति' नामक कविता लिखी और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'जुही की कली' जिसमें प्रेम की अभिव्यक्ति की गई। पंत ने 'उच्छवास', 'आँसू की बालिका, ग्रंथि' इत्यादि रचनाओं में प्रणय की अभिव्यक्ति स्वच्छ एवं स्वच्छन्द रूप में की है। छायावादी कवियों ने प्रेम के उदात्त रूप का चित्रण अधिक किया। नारी को प्रणय की रूपसी मानकर उसके प्रेम को स्वतंत्र धरातल पर चित्रित पर के छायावादी कवियों ने आत्मतुष्टि पाई। जयशंकर प्रसाद ने अपने शिखर काव्य कामायनी में प्रेम का परिष्कार किया। श्रद्धा के प्रणय का चित्रण एक आदर्श भारतीय नारी का चित्रण है, जिसमें उसकी सुकुमारता, कोमलता, रूप–यौवन विकास पाता है। वैसे छायावादी काव्य में नारी का प्रणय–चित्रण कहीं–कहीं वायवीय एवं स्वप्निल और कल्पनामय

भी रहा है, परंतु सर्वत्र प्रेम के चित्रण में संयम और अस्खलित रूप तथा सौन्दर्य देता है।

निष्कर्ष

छायावाद को काल्पनिकता का युग माना जाता है। मगर इस युगीन स्त्री, अंकन के साथ स्वतंत्र दृष्टि से देखने की शक्ति भी मौजूद थी। आदर्शवाद रूप से छुटकारा पाने में इस प्रवृत्ति का विशेष योगदान है। प्रसाद का ऐतिहासिक काव्य 'कामायनी' से लेकर पंत, निराला और महादेवी तक की कविताओं में स्त्री की अनन्य और अनुपम रूप महिमा का वर्णन है। पंत ने इसी नारी को प्रकृति, देवी, माँ और सहचारिणी बताया था। निराला का महत्त्व यह है कि उनकी दृष्टि से सभी सुंदरी, कल्याणमयी होने के साथ–साथ मजदूरिन, विधवा और सामान्य औरत भी थी। ऐतिहासिक दृष्टि से अबला और आदर्शवादी नारी को श्रद्धा और इड़ा बनाने का श्रेय इन्हें दिया जाता है।

संदर्भ सूची

1. काव्य और कला तथा अन्य निबंध–जयशंकर प्रसाद, पृ०–123
2. छायावाद–नामवर सिंह, पृ०–17
3. गद्य–पथ–सुमित्रानंदन पंत, पृ०–127
4. राग–विराग, संपा०–रामविलास शर्मा, पृ०–115
5. छायावाद–नामवर सिंह, पृ०–47
6. यामा–महादेवी वर्मा, पृ०–8
7. राग–विराग–संपा०– रामविलास शर्मा, पृ०–118–19
8. प्रसाद का संपूर्ण काव्य–संपा०–डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र, (प्रेम पथिक), पृ०–196
9. प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियाँ एवं निबंध–संपा०–सत्यप्रकाश मिश्र, पृ०–472
10. निर्वासित–इलाचन्द्र जोशी, पृ०–11
11. मैं इन से मिला– डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', पृ०–102
12. रश्मि–सुमित्रानंदन पंत, पृ०–29
13. वही, पृ०–30